International Journal of Jyotish Research: 2016; 1(1): 69-71

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2016; 1(1): 69-71
© 2016 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 02-05-2016
Accepted: 03-06-2016

डा0 धीरज कुमार
प्रवक्ता, महाराणा प्रताप मैमोरियल इण्टर कालिज शिमलाना, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डा0 धीरज कुमार
प्रवक्ता, महाराणा प्रताप मैमोरियल इण्टर कालिज शिमलाना,सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

वेदों मे वायुमण्डल रूपी 'सुरक्षा कवच'

डा0 धीरज कुमार

प्रस्तावना

आर्यों के जीवन में वेदों का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। सृष्टि के आदि से ही वेद ईश्वरीय ज्ञान के रूप में श्रद्धा व आदर प्राप्त करते रहे हैं। वेदों को सनातन चक्षु[1] कहा गया है उतना ही सनातन जितना कि सूर्य चक्षु[2]। यदि सूर्य चक्षु का अभाव होता तो प्राणियों की चर्मचक्षु निष्प्रयोजन ही होती। तथैव वेद चक्षु के अभाव में मनुष्यों का बुद्धि रूपी आन्तरचक्षु भी अशक्त होता,क्योंकि दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः वेद ईश्वरोक्त, सृष्टि के आदि में प्रादुर्भूत तथा ज्ञान का आदि स्रोत माना जाता है।[3] वेदों की अपौरुषेयता के सन्दर्भ में ब्रह्म सूत्रकार ने स्वशास्त्र में एक महान् युक्ति दी है।जिसे आख्यान के रूप में इस प्रकार समझा जा सकता है, मानो जिज्ञासु शिष्यों नें गुरुदेव के समक्ष 'अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'[4] सूत्र द्वारा ब्रह्म जिज्ञासा प्रकट की। दयालु गुरु ने समाधान हेतु ''जन्माद्यस्य यतः[5] अर्थात जिस निमित्त कारण से जगदुत्पत्ति, स्थिति आदि होती है, वह ब्रह्म है ''कहकर समाधान प्रस्तुत किया। शिष्यों ने गुरु से कहा हे गुरुवर्य क्या इसमें कोई प्रमाण है? तो गुरु ने कहा– हाँ, यहाँ आगम प्रमाण है और वेद स्वतः प्रमाण है क्योंकि 'शास्त्रयोनित्वात'[6] अर्थात् शास्त्र (वेद) का कारण भी ब्रह्म है। शिष्यो ने कहा– हे गुरुदेव! आप जगदुत्पत्ति में वेद का प्रमाण देते हो। पुनः वेदो को ईश्वरोक्त होने से स्वतः प्रमाण स्वीकारते हो। किन्तु वेद ईश्वरोक्त है यह तो अभी साध्य है सिद्ध नहीं हुआ। इसका क्या समाधान है? तो गुरु ने अतीव महत्त्वपूर्ण सूत्र कहा–''तत्तु समन्वयात्''[7] अर्थात् समन्वय करने से वेद ईश्वरोक्त होते हैं।''

वस्तुतः यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि– ज्ञान की दो अवस्था होती हैं। 1. सिद्धान्त (Theory), 2. प्रयोग (Practical)। पूर्वावस्था लिखित रूप होती है जबकि द्वितीयावस्था उसका मूर्त रूप होता है। यहा भी यही स्थिति है– वेद Theory है जगत् उन नियमों के आधार पर निर्मित साकार रूप है। यथा किसी लेखक की किन्हीं दो रचनाओं में सिद्धान्त रूप से समानता होती है तथैव परमेश्वर रूपीकर्त्ता की दोनों रचनाओं (वेद और जगत्) में सैद्धान्तिक समन्वय है। यह पूर्णतः समन्वय ही दोनों को एक कर्ता की रचना सिद्ध करता है। अतः ब्रह्मसूत्रकार द्वारा प्रदत्त युक्ति सत्य एवं वेदों की अपौरुषेयता को सिद्ध करती है। 'सर्वज्ञानमयो हि सः'[8] अर्थात् वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।[9] किन्तु वेदों में विद्या सूत्र रूप में हैं जिनका अन्वेषण आवश्यक है।

प्रस्तुत शोधपत्र में वेदों में वायुमण्डल रूपी सुरक्षा कवच पर विचार किया जाता है–

1 सात परिधि :

वेदों में अन्तरिक्ष के लिए 'चित्रबर्हिषम्' शब्द आया है जिसका अर्थ महर्षि दयानन्द ने आश्चर्यम् अन्तरिक्षं भवति' अर्थात अन्तरिक्ष विचित्र बना है''[10] किया है। यदि अन्तरिक्ष सर्वथा शून्य होता तो उसमें कोई विचित्रता भी न होती, तो फिर प्रश्न उत्पन्न होता है कि अन्तरिक्ष में क्या पदार्थ है? इसके समाधान हेतू वेद की शरण लेते हैं। वेद के एक मंत्र में 'सप्तास्यासन् परिधयस्त्रि'[11] शब्द आये हैं। महर्षि दयानन्द इस मंत्रांश की व्याख्या में लिखते है– ''अस्य ब्रह्माण्डस्य ब्रह्माण्डान्तर्गतलोकानां वा सप्त सप्त परिधयो भवन्ति''–समुद्र एकस्तदुपरि त्रसरेणु सहितो वायुर्दितीयः, मेघमण्डलमं तत्रस्थो वायुस्तृतीयः वृष्टिजलं चतुर्थस्तदुपरि वायुःपंचमः,अत्यन्त सूक्ष्मो धनञ्जयषष्ठः, सूत्रात्मासर्वत्र व्याप्त सप्तमश्च। एवमेकैकस्योपरि सप्तसप्तावरणानि स्थितानि सन्ति। अर्थात् ईश्वर ने एक–एक लोक के ऊपर सात आवरण–एक समुद्र, दूसरा त्रसरेणु, तीसरा मेघमण्डल का वायु, चौथा वृष्टिजल और पांचवा वृष्टिजल से ऊपर एक प्रकार की वायु जो कि धनञ्जय से भी सूक्ष्म है।[12] इनमें समुद्र के अतिरिक्त अन्य छः आवरण वायुमण्डल के अन्तर्गत है। आधुनिक विज्ञानानुसार इसकी ऊँचाई 16 से 29 हजार किमी0 मानी जाती है परन्तु धरातल से मात्र 800 किमी0 ऊँचाई तक का वायुमण्डलीय भाग ही अधिक महत्वपूर्ण है। वैंज्ञानिकों ने स्वगवेषणाओं के आधार पर वायुमण्डल को मुख्यतः परिवर्तनमण्डल (Troposphere), ओजोनमण्डल (Ozonosphere), समतापमण्डल (Stratosphere) तथा मध्यमण्डल

(Mesosphere) ऊर्ध्वाकार विभाजित किया है।[13]
पृथ्वी के चारों ओर इन सात परिधियों कें निर्माण में परमेश्वर का क्या प्रयोजन रहा है? इस विषय में वेद कहता है–''वरुणे स्पशः निषेदिरेनिर्णिजं हिरण्ययं द्रापिं विभ्रत वस्त''[14] अर्थात् वायुमण्डल सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है। वायु अनेक गैसों के समूह का नाम है।वैशेषिक शास्त्रानुसार वायु स्पर्श गुण वाली है[15] अन्य भूतों में भी स्पर्श वायु के कारण ही है। इस मंत्रांश में आये 'रूपशः' शब्द का अर्थ म0 दयानन्द ने ''स्पर्शवन्तः सर्वेपदार्थाः[16]'' किया है अतः स्पष्ट है कि वरुणे = वायु में, स्पशः = स्पर्श गुण वाले सूक्ष्म तत्त्वों के अतिरिक्त, स्पर्श गुण वाली अनेक गैसें हैं। उपर्युक्त सप्त आवरणों में भिन्न–भिन्न गैसों की प्रधानता है।
वेद वर्णित सात परिधियां = आवरणों की वैज्ञानिकों द्वारा विभाजित आवरणों से यदि तुलना की जाये तो धनञ्जय स्ट्रेटोस्फीयर से और सातवां सूक्ष्म सूत्रात्मा आयनोस्फीयर से समानता रखता है। समुद्र को छोडकर शेष चारों परिधियां टापोस्फीयर के ही चार भेद हैं।

सुरक्षा कवचः

यह समस्त निर्णिज = शुद्ध वायुमण्डल, द्रापिं = कवच की भांति, विभ्रत = सब ओर से ढके हुए है।[17] यहाँ प्रत्येक शब्द बडा महत्वपूर्ण है। विचार करने पर निम्न तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं– (1) वायुमण्डल पृथ्वी को चारों ओर से ढके हुए है। (2) वायुमण्डल शुद्ध रूप में ही कवच की भांति कार्य करता है।
आधुनिक विज्ञान वायुमण्डल में विभिन्न गैंसों का प्रतिशत निम्न प्रकार स्वीकारता है–

नाइट्रोजन(N_2) – 78.08
आक्सीजन(O_2) – 20.95
आर्गन (Ar) – 0.93
कार्बनडाईआक्साइड (CO_2) – 0.03

इनके अतिरिक्त वायुमण्डल में कुछ अन्य गैसें भी पायी जाती हैं– नियान, हीलियम, क्रिप्टान जीनान, ओजोन तथा हाइड्रोजन आदि। विभिन्न भौगोलिक कारणों से ये गैसें वायु के रूप में धरातल पर संचरण करती रहती हैं। प्राणियों को जीवन हेतु शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है। जीव स्वसन क्रिया में आक्सीजन लेकर CO_2 छोडते रहते हैं इसके अतिरिक्त जैसे–जैसे मानवीय गतिविधियां और क्रियाकलाप बढ रहे हैं, वैसे–वैसे वायुप्रदूषक तत्त्वों में भी वृद्धि हो रही है। मोटर, गाडी, पैट्रोल, कोयला, लकडी, खनन, कृषि एवं औद्योगिक कार्यों द्वारा निकलने वाले धुएँ एवं अन्य रासायनिक आदि के कारण वायु प्रदूषण में निरन्तर वृद्धि हो रही है। कार्बन मोनो आक्साइड, सल्फर डाइआक्साइड, हाइड्रोकार्बन, आरसेनिक, पारा एवं शीशा आदि प्रदूषक तत्त्व निरन्तर वायु में मिलनें से सम्प्रति वायु प्रदूषण की भयंकर समस्या उत्पन्न हो गई है। फलस्वरूप कार्बन मोनो आक्साइड का प्रभाव हृदय गति, कार्बन डाईआक्साइड का प्रभाव श्वास लेने में अवरोध, हाइड्रोकार्बन का आँखों में जलन, आरसेनिक का फेफडा व चर्म कैंसर, पारा सरीर को अपंग व विकृत कर रहा है तथा शीशा का प्रभाव मस्तिष्क पर तथा उक्तरक्तचाप आदि को बढाने वाला है। इस प्रकार अशुद्ध वायुमण्डल जीवों के लिए प्राणघातक सिद्ध हो रहा है। अतः वर्तमान मे वायुप्रदूषण को रोकने के उपाय किये जा रहे हैं। यही विषय ऋग्वेद में भी आया है – ''अयं = वायु, अग्रियः = अग्रेभवोऽत्युत्तम, हृदिस्पृक् = यो हृदयन्तःकरणे सुखं स्पर्शयति सः, शं = सुखमतिशयितं यस्मिन्सः''[18] अर्थात यह वायु शुद्ध होकर ही अत्यन्त सुख प्रदान करने वाली होती है। इस मंत्र के भावार्थ में महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट लिखा है – मनुष्यैः शोधितः उत्कृष्टगुणोऽयं पवनोऽत्यन्तसुखकारी भवति।

ओजोनपरतः

ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र में भूमि के चारो ओर एक मोटी परत का उल्लेख है वेद मंत्र निम्नवत् है– ''महत्तदुल्बं स्थविरं तदासीद्येनाविष्टितः प्रविवेशिथ''[19] उल्ब शब्द गर्भ शिशु के ऊपर ढकी हुई झिल्ली (Membrane) के लिए आता है यहाँ पृथ्वी को एक गर्भस्थ शिशुवत् मानते हुए उसकी रक्षा के लिए विद्यमान परत को महान् और स्थूल उल्ब कहा गया है।
आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में इस महत् = महान्, स्थविरं = स्थूल, उल्ब = सुरक्षा कवच के विषय में विचारने पर ज्ञात होता है कि – Stratosphere के निम्न भाग में 15 से 35 किमी0 के मध्य ओजोन गैस की एक मोटी परत होती है यह परत ओजोन परत या ओजोन मण्डल कहलाती है। ओजोन गैस O_3 में आक्सीजन के 3 परमाणु होतें हैं। यह गैस आक्सीजन से मिलती – जुलती गैस है। इसमें एक विशेष प्रकार की तीखी गन्ध होती है तथा इसका रंग नीला होता है। यही O_3 गैस सूर्य से आने वाली हानिकारक गैसों या किरणों – मुख्यतः पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी पर आने से रोकती है केवल लाभदायक किरणों को ही पृथ्वी पर आने देती है। वेद कहता है कि – वायु देवान् = दिव्यान्, गुणान् = भोगान् आ इह वक्षति = वहति प्रापयति। [20] अर्थात वायु अग्नि की सहायता से दिव्य गुणों, भोगों को पृथ्वी को प्राप्त कराती है। इस प्रकार परमेश्वर ने पृथ्वी और उसके जीवधारियों की सुरक्षार्थ ओजोन परत को रक्षा कवच के रूप में वायुमण्डल में स्थापित किया हुआ है। वैज्ञानिकों के मतानुसार पराबैंगनी किरणों के सीधा सम्पर्क में आने से मनुष्य, जीव, वनस्पति आदि में रोग प्रतिरोधक क्षमता का क्षरण हो जाता है। मनुष्य में त्वचा का कैंसर, आँखों में मोतियाबिन्द जैसे रोगों की वृद्धि होती है। समुद्री तथा स्थलीय जीव – जन्तु, कृषि उपज तथा वनस्पति एवं खाद्य पदार्थों पर भी इन पराबैंगनी किरणों का प्रतिकूल प्रभाव पडता है। इस प्रकार ओजोन परत पृथ्वी एवं उसके समस्त जीवों के लिए जीवन सुरक्षा में प्रभु द्वारा अनुपम उपहार है। 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' इस पर नाक भौंह सिकोड़ने वालों को ज्ञात होना चाहिए कि आधुनिक विज्ञान जिन रहस्यों का आज पता लगा रहा है। वेद उस विद्या का आदिकाल से ही प्रतिपादन कर रहा है। वेद कहता है कि – वायु घोरवर्पसः[21] होती है जिसका अर्थ महर्षि दयानन्द ने ''हननशीलं रूपं स्वरूपं येषां ते अर्थात् हानिकारक तत्त्वों को नष्ट करने वाली।'' किया है। इसी मंत्र में वायु को ''रिशादसः = रोगा अदसोऽत्तारो यैस्ते[22] '' अर्थात रोगों को नष्ट करने वाली कहा है। वेद मनुष्य को सावधान करता है– वायु में अमृत की निधि है।[23] वायु मे औषध कल्याण के लिए है।[24] अतः वायु प्रदूषण रोकें। वेद के शब्द हैं–नूचिन्नुवायोरमृतं विदस्येत्[25] अर्थात् वायु में अमृत है उसे नष्ट न होने दें। किन्तु मानव ने तात्कालिक लाभ हेतु स्वार्थवश इस वैदिक सन्देश को सर्वथा विस्मृत कर दिया है। अतएव मानव द्वारा अमर्यादित उद्योगों का विस्तार उस अमृत को नष्ट कर रहा है। उद्योगों से निस्सृत क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFCs) वायुमण्डल में पहुँचकर ओजोन परत को निरन्तर क्षीण कर रहा है। क्लोरीन का एक परमाणु ओजोन के 1,00,000 अणुओं को नष्ट कर देता है। ये क्लोरीन परमाणु CFCs के विघटन से बनते हैं। इसकी रासायनिक क्रिया निम्नवत् है –

$$Cl + O_3 \rightarrow ClO + O_3$$
$$ClO + O \rightarrow Cl + O_2$$

फ्रिऑन (Freon) सबसे अधिक घातक क्लोरोफ्लोरो कार्बन है। इसका प्रयोग रेफ्रिजरेटर, एयरकण्डिश्नर, गद्देदार सीट या सोफों में प्रयुक्त फॉम तथा एरोसॉल स्पो में होता है।

प्रकाश अवरोधन

ऋग्वेद में एक स्थान पर विचित्र सी बात आयी है। वहाँ अग्नि को 'दिवः आरोधन[26]' अर्थात् प्रकाश को रोकने वाला कहा है। शंका होती है कि अग्नि को अनेकत्र प्रकाशोत्पादक कहा गया है। वह फिर प्रकाश को रोकने वाला कैसे हो सकता है? इसका समाधान यह है कि यहाँ उस अग्नि का वर्णन है जिसे वेद में वायु का बल

कहा गया है। वेद के शब्द हैं – ''मरूतां शर्द्धो अच्युतमिन्द्रम्'' महर्षि दयानन्द ने इसका अर्थ – वायुवो के मध्य नष्ट न होने वाला विद्युत रूप बल[27] किया है। वायु का यह बल ही प्रकाश का अवरोधन करता है। सूर्य से अपार ऊर्जा मुक्त होती है जो विकिरण द्वारा पृथ्वी पर आती है। वायुमण्डल प्रकाश का अवरोधन करके ऊष्मा को अवशोषित कर लेता है। यह एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है जिसकी ओर वेद ने संकेत किया है। वस्तुतः सूर्य इतनी ऊर्जा उत्सर्जित करता है यदि वायुमण्डल ऊष्मा को अवशोषित न करके सम्पूर्ण रूप में पृथ्वी तक आने दे तो पृथ्वी का तापक्रम दिन में 100^0C हो जायेगा जो जैविक सृष्टि को नष्ट कर देगा। इसी प्रकार रात्रि में ऊष्मा पृथ्वी से अन्तरिक्ष में मुक्त होती है तब भी वायुमण्डल ऊष्मा को एक निश्चित सीमा तक ही मुक्त होने देता है। वायुमण्डल के अभाव में रात्रि में पृथ्वी का तापक्रम -180^0C तक चला जाता। वायुमण्डल के इसी गुण को वेद ने 'हिरण्यदाः' शब्द से कहा है जिसका अर्थ महर्षि दयानन्द ने वायवो हिरण्यं तेजो ददति[28] अर्थात् वायु तेज प्रदान करती है। वायु ऊष्मा को अवशोषित करती है इसके लिए वेद वायु को शुक्रः = शोषक[29] कहता है।

ग्रीन हाउस प्रभाव (Green House Effect)

वायुमण्डल में जब से प्रदूषण की मात्रा बढने लगती है तब वायुमण्डल ऊष्मा अधिक से अधिक अवशोषित कर लेता है तो पृथ्वी का तापमान बढ़ने लगता है जो जैविक सृष्टि के लिए घातक है। आधुनिक विज्ञानानुसार CO_2, एवं मीथेन आदि अन्य ऊष्मारोधी गैसें पृथ्वी से विसरित होकर ऊष्मा का कुछ भाग अवशोषित कर लेती हैं एवं पुनः धरातल को वापस कर देती हैं इस प्रक्रिया में वायुमण्डल के निचले भाग में अतिरिक्त ऊष्मा एकत्र हो जाती है। विगत कुछ वर्षों से मानवीय क्रियाकलापों के कारण इन ऊष्मारोधी गैसों की मात्रा वायुमण्डल में बढ़ जाने के कारण वायुमण्डल के औसत तापमान में वृद्धि हो गयी है इसे वैज्ञानिकों ने ग्रीन हाउस प्रभाव कहा है।

ग्रीन हाउस गैसें तथा उनके स्रोत निम्नलिखित हैं

1.कार्बनडाई ऑक्साइड CO_2 – जीवाश्म ईंधन व लकड़ी दहन।
2.नाइट्रस ऑक्साइड NO_2 – उर्वरक प्रयोग एवं जन्तु अपशिष्ट।
3.मीथेन CH_4 – बायोगैस तथा जीवाणु अपघटन।
4.क्लोरोफ्लोरो कार्बन CFCs – फ्रऑन (ठन्डा करने वाला पदार्थ)
5.हेलनस (हेलाकार्बन CX, FX, BRX) – अग्निशमन उपकरण[30]

ग्रीन हाउस प्रभाव के कारण सम्प्रति ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग से जलवायु में परिवर्तन हो रहा है, समुद्रतटीय क्षेत्रों में बाढ़ का खतरा उत्पन्न हो गया है, अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि आदि आपदाओं की सम्भावना बढ़ रही है जो विश्व के वैज्ञानिकों एवं बुद्धिजीवियों के लिए चिन्ता का विषय है।

इन सब समस्याओं का समाधान भी खोजने से वेदों मे ही प्राप्त हो जाता है। वेद कहता है कि– ''वनस्पति वन आस्थापयध्वम्''[31] अर्थात वन में वनस्पति उगाओ। प्रयोजनवश वनस्पति को काटना भी पड़े तो उनके बदले में अनेक वृक्ष लगाना चाहिए।[32] क्योंकि पृथ्वी पर जितनी सहस्त्रों पत्तों वाली औषधियां हैं, वे सब हमें प्रदूषण जनित मृत्यु से छुड़ाती हैं।[33] यह वर्तमान में सिद्ध ही हो चुका है। वनीकरण प्रदूषण को नष्ट करने का सर्वोत्तम उपाय है। वेद में प्रदूषण निवारण के अनेक उपाय बताये गये हैं किन्तु स्थानाभाव के कारण सबका वर्णन करना असम्भव है। यहाँ सक्षेप में वायुमण्डल रूपी सुरक्षा कवच पर विचार किया गया है।

यद्यपि वेदों में विज्ञान पूर्णतः सुस्पष्ट एवं प्रयोक्तव्य रूप में नही है सिद्धान्तों का संकेत मात्र है। पुनरपि ऋषियों के भाष्यों के आधार पर बहुत कुछ उपलब्ध हो सकता है। [ओ३म् शम्]

सन्दर्भ–सूची

1. पितृ देवमनुष्याणां वेदश्चक्षुःसनातनम्। मनु0 12/44
2. तच्चक्षुदैवहितं पुरूस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।। मनु0 36/24
3. अनादि निधना नित्या वागुत्सृष्ट्या स्वयंभुवा आदौ वेदमयी दिव्या ..... महा0 भा0 12/224/55
4. ब्रह्मसूत्र 1/1/1
5. वही 1/1/2
6. वही 1/1/3
7. वही 1/1/4
8. मनु0 2/7
9. आर्य समाज का दूसरा नियम।
10. ऋ0 1/23/13
11. यजु0 31/15
12. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (सृष्टि उत्पत्ति नियम) म0 दयानन्द
13. पर्यावरणीय अध्ययन, अर्चना प्रकाशन मेरठ के आधार पर।
14. ऋ0 1/25/13
15. स्पर्शवान् वायुः। वैशेषिक दर्शन् 2/1/4
16. दयानन्द भाष्य ऋ0 1/25/13
17. द्रष्टव्य – दयानन्द भाष्य ऋ0 1/25/3
18. द0 भा0 1/16/7
19. ऋ0 10/51/1
20. ऋ0 द0भा0 4/8/2
21. ऋ0 1/19/5
22. द0भा0
23. यददो वात ते गृहेऽमृतस्यनिधिर्हितः। ऋ0 10/186/3
24. वात आ वातु भेषजं शंभु 1 ऋ0 10/186/15
25. ऋ0 6/37/3
26. ऋ0 4/8/2
27. वायूनाम् अच्युतं विद्युताख्यं बलं। द0भा0 ऋ0 2/3/3
28. ऋ0 2/35/10
29. ऋ0 2/41/2 द0भा0
30. पर्यावरणीय अध्ययन (अर्चना प्रकाशन के आधार पर)
31. ऋ0 10/101/11
32. अयं हि त्वा ..... अतस्वं देव वनस्पते शतवल्शो विरोह, सहस्र वल्शा वि0 वयं रुहेम। यजु0 5/43
33. यावती कियतिश्चेमाः पृथिवीयामध्योषधिः।
त मा सहस्त्रपर्ण्यो मृत्योर्मुञ्चन्त्वं हसः।। अथर्व0 8/7/15